IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गिरिराज किषोर का कथा साहित्य

कृष्णानंद कुमार
शोध– छात्र, स्नात्तकोत्तर हिन्दी
ति0 मा0, भागलपुर विष्वविद्यालय, भागलपुर

कहानियों का जन्म तो उसी समय से हुआ, तब आदमी ने बोलना सीखा। कहानी का विकास मनुष्य की भाषा के साथ–साथ माना जा सकता है जहाँ मनुष्य ने बोलना सीखा, कहानी ने भी कोई न कोई रूप अवष्य ग्रहण किया। इस प्रकार कहानी सदैव से जीवन का एक विषेष अंग रही है।

भारतेन्दु युग में आधुनिक कलात्मक कहानी का विकास नही हुआ था। आधुनिक हिन्दी कहानी का विकास द्विवेदी युग में हुआ। सरस्वती (1900) पत्रिका के प्रकाषन के साथ ही हिन्दी कहानी का जन्म मान्य है। सन् 1900 के लगभग हिन्दी कहानी का जन्म हुआ और 1912 से 1918 ई0 के बीच वह पूर्णतः प्रतिष्ठित हो गयी। कहानियों के प्रावल्य का मुख्य कारण आजकल का जीवन–संग्राम और समयाभाव है। यही कारण है कि हम कहानी ऐसी चाहते है कि वह थोड़े–से थोड़े शब्दों में ही कही जाए। वही कहानी सबसे उत्तम होती है जो किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित होती है। जीवन में नित्य उपस्थित समस्याओं से उपजा द्वन्द्व कहानी को चमका देता है। आज के कहानी–लेखक की प्रेरणा सौन्दर्य की वह झलक है जिसके द्वारा वह पाठक की सुन्दर भावनाओं को स्पर्ष करता है। जो लेखक मानव–हृदय के रहस्यों को खोलने में सफल होता है।

प्रसार की दृष्टि हिन्दी कहानियों ने थोड़े ही दिनों में साहित्य के अन्य सभी अंगों पर अपना सिक्का जमा लिया है। इतना ही नही हिन्दी कहानियों ने अपने सार्वभौम आकर्षण संसार के प्राणियों को एक–दूसरे के नजदीक जितना कर दिया है। अब यह मान लिया गया है कि सांस्कृतिक विकास के लिए सरल साहित्य से उत्तम कोई साधन नही है। अब लोग यह भी स्वीकार करने लगे है कि कहानी कोरी गप नही है और उसे मिथ्या समझना भूल है। इस लिहाज से गल्पकार अपनी रचनाओं को चाहे जिस साँचे में ढ़ाल सकता है। लेकिन किसी भी दषा में वह उस महान सत्य की अवहेलना नही कर सकता है जो जीवन–सत्य कहलाता और साहित्य का छात्र तो इतना तो भली प्रकार जानता है कि जीवन–सत्य–जीवन सौंदर्य से परे कुछ नहीं होता। और जो जीवन का सौंदर्य है वही साहित्य का भी सौन्दर्य है, कहानी या कुल मिलाकर साहित्य या काव्य में जो आत्मा की मौलिक अनुभूति की प्रेरणा है।

कहानी आधुनिक समाज की प्रमुख साहित्यिक विद्या है। अतः उसमें परिवार, राजनीतिक तथा शासन के साथ मनुष्य के संबंधों के सामाजिक जगत के पुनः सृजन का ईमानदार प्रयास दिखाई पड़ता है। महान कहानीकार सीधे–सीधे सामाजिक जगत का वर्णनात्मक भाषा में चित्रण करने में प्रवृत नहीं होता। कहा जा सकता है कि कहानीकार का कार्य स्पष्टतः अधिक कठिन होता है। वह कृत्रिम रूप से बनाई गई स्थितियों में अपने पात्रों को गति देता है, जिससे वे अपनी निजी नियति का संधान करते हैं सामाजिक जगत में मूल्यों और अर्थवत्ता का संधान करते हैं। अतः समाजषास्त्री का कार्य केवल साहित्यिक रचनाओं में ऐतिहासिक और सामाजिक प्रतिविम्बकी खोज करना मात्र नहीं है, बल्कि विषिष्ट साहित्यिक रचनाओं में सन्निहित मूल्यों की प्रकृति को स्पष्ट करना है। इसे ही भाव की संरचना कहा गया है। साहित्य के किसी भी व्यावहारिक समाजषास्त्र का मुख्य उद्देष्य अनिवार्यतः उस अर्थ के मर्म की पहचान होनी चाहिए जो विभिन्न साहित्यिक रचनाओं के केन्द्र में विद्यमान रहता है।

समाज के प्रतिविम्ब के रूप में कहानी–साहित्य का अध्ययन तथा कहानीकार के सामाजिक संदर्भ की दृष्टि से कहानी साहित्य का अध्ययन – ये दो प्रमुख अध्ययन प्रवृतियाँ हैं। परन्तु समाजषास्त्रीय दृष्टिकोण इतने तक ही सीमित नहीं है। एक तीसरा संदर्भ और भी है जो उच्चतर कौषल की अपेक्षा करता है। इसमें उन तरीकों की खोज की जाती है जिनसे किसी विषिष्ट ऐतिहासिक क्षण में विषेष समाज द्वारा किसी

कहानी को वास्तविक रूप से स्वीकार किया जाता है। कि उनकी महानता का अर्थ है – मानवीय और सामाजिक स्थितियों में गहन अंतदृष्टि का अंतर्भाव। महान कहानी जीवित रहती है। वास्तव में मानव–समाज का कोई भी अध्येता इन कहानियों की सामाजिक चेतना और उनमें अभिव्यक्ति समाज की साहित्यिक चेतना की उपेक्षा नही कर सकता। कहानीकार जितना अधिक अपनी कला की गहराई में अतः प्रवेष करता है उतना ही वह अपने युग और जाति की चेतना में प्रवेष करता है। ऐसे कहानीकार की कहानियाँ ही अपने युग का प्रतिनिधित्व करती है। साहित्य अपने मूल में व्यक्ति और समाज के कलागत आदान–प्रदान की भाषागत अभिव्यक्ति है।

जो साहित्यकार मानव नियति के संदर्भ में राष्ट्र के नव निर्माण के प्रति अपना दायित्व अनुभव करता है उसके लिए सबसे प्रमुख चिंता हो जाती है– सामान्य जन की मुक्ति। साहित्य का संबंध जनसामान्य की संस्थिति से है, जनसामान्य की भूख–प्यास से है– मानसिक और सामाजिक। जनता के साहित्य से है ऐसा साहित्य जो जनता के जीवन–मूल्यों को प्रतिष्ठापति करता करता हो। सभी प्रकार का साहित्य जनता का साहित्य है, वषर्ते वह जनता को मुक्तिपथ पर अग्रसर कर सके। प्रेमचंद, निराला, नागार्जुन, मुक्ति–बोध, राजकमल चौधरी से लेकर निर्मल वर्मा तक के संदर्भ में यह तथ्य उजागर होता है। हिन्दी साहित्य का भौगोलिक क्षेत्रफल खास बड़ा है। हिन्दी साहित्य में पाठक और आलोचक भी समस्या के रूप में ही उपस्थित था अनुपस्थित मिलते है – समाधान के रूप में कम।

साहित्य एक घटना है जो लेखक संरक्षक आलोचक प्रकाषक तथा पाठक की अंतः क्रियाओं द्वारा घटित होता है। लेखक एक विषेष पाठक वर्ग को संबोधित करता है। अतः उसकी सर्जनात्मक प्रक्रिया पाठक वर्ग की अभिरूचियों पर्यावरण और विचाधारा से नियंत्रित होती है।

साहित्य अपने मूल में व्यक्ति और समाज के कलागत आदान–प्रदान की भाषागत अभिव्यक्ति है। इस दृष्टि से कहानियों में समाज–संदर्भ जितना प्रत्यक्ष और प्रभावी होगा जनमानस की रूचि कहानियों के प्रति उतनी ही तीव्र होगी। कहानी कार समाज सुधार के निमित समाज अज्ञान और अंधकार मिटाने और देषभक्ति की भावना जगाने में अपनी कहानियों को साधन रूप में प्रयुक्त किया है। साहित्य सामाजिक चित्रण के साथ–साथ मनोरंजन और उपदेष देने की भी थी। अधिकतर कहानीकारो ने सामाजिक स्थिति को यथातथ्य

रूप में ही ग्रहण कर स्वस्थ समाज की कामना की है। साहित्यकार भी सामाजिक प्राणी है, इसलिए समाज की परिस्थितियों से अपने को अलग नही रख सकता है। साहित्य की दुनिया एक ऐसी दुनिया है जहाँ घृणा, विद्वेष, वैमनष्य के लिए कोई स्थान नहीं है ''[1] साहित्य व्यक्ति और समाज की सर्वागीण मुक्ति–आकांक्षा और मुक्ति प्रयत्नों को लेकर ही चलता है आज भारत में भी जो भी साहित्यकार मानव–नियति के संदर्भ में राष्ट्र के नवनिर्माण के प्रति अपना दायित्व अनुभव करता है, उसके लिए सबसे प्रमुख चिंता हो जाती है– सामान्य जन की मुक्ति। भारत की स्वतंत्रता तब तक सार्थक नहीं है जब तक सामान्य जन स्वतंत्र नहीं है। सामान्य जन के स्वतंत्र होने का अर्थ यह नही है कि उसे भरपेट भोजन जरूरत के मुताबिक कपड़ा मिल जाय। साहित्यकार सामान्य जन की स्वातंत्र्य वर्ग दायित्व लेता है।

साहित्य का संबंध जनसामान्य की स्थिति से है जनसामान्य की भूख–प्यास से है मानसिक और सामाजिक। जनता के साहित्य से अर्थ है ऐसा साहित्य जो जनता के जीवन मूल्यों को जनता के जीवनादर्षो को प्रतिष्ठापित करता हो, उसे मुक्ति पथ पर अग्रसर करता हो आज हिन्दी कहानी का विकास आरवस्तिदायक लगता है। आज हिन्दी काहनी समूचे विष्व साहित्य के समक्ष खड़ी है। आज हिन्दी कहानी जो अपनी शताब्दी से अधिक की यात्रा करके आयी है; उसमें अमरकांत, मार्कण्डेय, भीष्म साहनी, निर्मल वर्मा, शलैष मटियानी, गिरिराज किषोर गोविन्द मिश्र जैसे वरिष्ठों से लेकिन जब नए लोगों पर ध्यान देते है; तो लगता है कि उन्होंने कहानी के षिल्प में, शैली में भाषा के स्तर पर विचार के स्तर पर और अपने समय की धारा या चुनौती के स्तर पर बड़ा काम किया है।

उधर मुक्तिबोध कहते थे– नहीं होती कही

★ ''गिरिराज किषोर एक वहुआयामी प्रतिभा सम्पन्न लेखक है ''[2] उपन्यासकार के अतिरिक्त कहानीकार के रूप में भी इन्होंने पर्याप्त ख्याति प्राप्त की है। डॉ हुकुम चंद राजपाल गिरिराज किषोर को नई कहानी के समर्थ हस्ताक्षरों में परिगणित करते है– ''मोहन राकेष, राजेन्द्र यादव, कमलेष्वर और धर्मवीर भारती ने नई कहानी को स्थापित करने में सर्वाधिक प्रभावपूर्ण भूमिका निभाई है। नई कहानी के अन्य हस्ताक्षरों में निर्मल वर्मा, उषा प्रियम्वदा, मन्नू भंडारी, फणीष्वरनाथ रेणु, श्रीकांत, अमरकांत, राम कुमार गिरिराज किषोर, राजकमल चौधरी कृष्णा सोबती आदि उल्लेखनीय है।''[18]

सन् 1960 ई0 के बाद जो युवा पीढ़ी कहानी लेखन में प्रवृत हुई उनमें कहानी के कथानक को महत्व न देकर संवेदनीय मूल कथ्य पर वल देने की प्रवृति देखी जा सकती है। इनमें अधिकांष कहानियाँ नई संवेदना और नए वस्तुषिल्प की कहानियाँ हैं। इनमें मानवीय संबंधों के बदलाव पर बल दिया गया है। सामंती समझ और स्वायत्त अनुभव खण्ड गिरिराज किषोर की कृतियों में बड़ी प्रामाणिकता से उभरते हैं। मोहभंग और कड़वाहट भरी हताषा का वातावरण इनकी रचनाओं का यथार्थ दृष्टिकोण है और विषेष बात यह है कि वे खतरनाक स्थितियों का सरलीकरण नहीं करते। साम्राज्य–विरोधी संघर्ष को तीव्रता से उठाते है और इस दृष्टि से उनके कहानी–संग्रहों नीम के फूल, पेपर वेट, शहर दर शहर, रिष्ता और अन्य कहानियाँ और हम प्यार कर लें इन सभी वर्त्तमान की त्रासदी का आतंक फैला हुआ है। ''अपने समय की सही पहचान करानेवाले कथाकारों में गिरिराज किषोर का एक विषिष्ट स्थान है।''[19]

कहानी विधा हमे अपने सामाजिक जीवन जिंदगी की विविधताओं और जटिलताओं को समझने और जीने में मदद करती है। कहानी के माध्यम से हम एक अनुभव को बार–बार जीते हैं। गिरिराज किषोर के अनुसार कहानी की मूल मानसिकता या उसके मिजाज को समझने और उसकी विविधता को बनाए रखने के लिए उसे समाज की उस अन्तर्धारा से जोड़ना होगा जो निरंतर और तेजी से बदल रही है। वैज्ञानिकों की तरह कहानीकारों को भी नए–नए क्षेत्रों और आयामों को खोजने की आवष्यकता है। गिरिराज किषोर के लिए कहानी मनोरंजन का माध्यम नही हैं। उनके शब्दों में – ''कहानियाँ न केवल रोचकता के लिए लिखी जाती है और न कोई सुधार के लिए लिखी जाती है। केवल उनका काम पाठक को झिंझोरने का काम है और प्रष्नो से घेर देने का काम है।''[22]

गिरिराज जी की विषेषता यह है कि उनकी हर है कहानियों में अलग–अलग अनुभव और अभिव्यक्ति देखने को मिलेगी।

गिरिराज किषोर समकालीन हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण रचना है।''[26] संवेदनषील रचनाकार समय की नब्ज को पहचानतें हैं। गिरिराज किषोर ऐसे ही रचनाकार है।

संदर्भ

1. शोध संदर्भ–4 : अग्रवाल एवं अग्रवाल पृ0. 239
2. समाजिक–सांस्कृतिक मानव विज्ञानः ए0 एन शर्मा पृ0. 102
3. अनुसंधान प्रविधिः एस0 एन0 गणेषन पृ0. 14
4. शोध प्रविधिः डॉ0 विजय मोहन शर्माः पृ0. 24
5. हिन्दी साहित्य का इतिहासः रामचन्द्र शुक्ल पृ0. 82
6. शोध प्रविधिः डॉ0 विनय मोहन शर्माः पृ0. 10
7. गिरिराज किषोर के उपन्यासों का समाजषास्त्रः डॉ0 सुवोध मंडलः पृ0. 18
8. कथाकार गिरिराज किषोर :– डॉ0 सुरेष सदावर्ते पृ0 21
9. अपने आस–पास (स) वलराम पृ0 32
10. आर्न्द्रे की प्रेमिका तथा अन्य कहानियाँः– गिरिराज किषोर पृ0. 8
11. ढ़ाई घर : गिरिराज किषोर पृ0. 8
12. सिस्टर यू आर ग्रेटः गिरिराज किषोरः पृ0 5
13. किस्साः (सं0) प्रेम प्रभाकरः पृ. 3
14. कुछ विचार : प्रेमचंद पृ0. 36